दो०- अमर मूल वर्णन किया, नाम अमोल अपार ।
सभी कर्म को काट दे, कहे कबीर बिचार ।।

।। कबीर वाणी ।।

[इति श्री अमर मूल नाम लोक महिमा वर्णन]

द्वितीय विश्राम

(धर्मदास वचन)

चौ०- धर्मदास ये विनती करता । जिससे मन का संशय मिटता ।।
अमर मूल का कहो विचार । जिससे जीव उतरते पार ।।
कौन भक्त जो हंस कहावे । कौन विधि से पंथ चलावे ।।
वह मर्यादा दो बतलाई । तुम हंसों को हो सुख दाई ।।

(सद गुरु वचन)

धर्मदास सुन धर कर ध्यान । जिससे हंस का हो कल्याण ।।
पहले गुरु की सेवा करना । उससे काल के भय को हरना ।।
महा प्रसाद प्रेम से पावे । सेवा करके गुरु मनावे ।।
हृदय में हो प्रेम आनन्द । चौरासी के छूटें फन्द ।।
गुरु प्रभु में भेद ना पावे । वही हंस सतलोक को जावे ।।
एक ही मत से सदा ही रहता । दुविधा भाव कभी नहीं रखता

गुरु साधु की सेवा करते | उनको मुक्ति निकट ही देते ||

दो॰ गुरु सन्तों को जान के, हृदय करे विश्वास |
कहे कबीर उस हंस का, सत्यलोक हो वास ||

चौ॰- सतगुरु जहां आरती करते | सबको छोड़ वहां पग धरते ||
गुरु के चरणा मृत को लेना | मुख पूजा कर आचवन करना ||
सदां गुरु की दया में रहना | गुरु की कभी ना निन्दा करना ||
नि: अक्षर को चित में सुमिरना | इससे आवागमन मिटाना ||
नि: अक्षर के भाव को पावे | देह छोड़ सत लोक को जावे ||
गुरु के वचन सोचकर माने | नाम बिना सब मिथ्या जाने ||
और ना देखे और ना परखे | निशदिन पल-पल नाम ही गावे

दो॰ जग बन्धन से छूट जा, करनी देय बताय |
एक नाम को जानके, उसी में रहे समाया ||

चौ॰ कर्म भ्रम की छोड़के आश | एक नाम पर हो विश्वास ||
कुल की लज्जा भ्रम छोड़ते | जो ऐसे रहें साधु होते ||
इस विधि से तुम पंथ चलाओ | जन्म जन्म के पाप मिटाओ ||
वंश तुम्हारा लोक को जावे | बिना नाम जग डूबा जावे ||
नाम को जाने वंश तुम्हारा | बिना नाम जग फस रहा सारा ||

वेद भी नाम का भेद ना पावें। नेति-नेति करके सब गावें॥
आदि ब्रह्म को पार ना पावें। पढ़ पढ़ पण्डित भ्रम में आवें॥
मुक्ति पंथ ना सुरति समावैं। पढ़ गुन थकें पार ना पावें॥
अन्त काल यमराज जो आवें। तब यह विद्या काम ना आवें॥
विद्या पढ़ कर रहा गर्व में। अन्त काल को चला नर्क में॥
वेद पुराण की साख बतावें। यम से कौन बिन नाम बचावें॥
व्यास ने ब्रह्म की स्तुति की थी। श्री भागवत कथा कही थी॥
व्यास जी ने सबको सुनाया। पंडित कोई मरम ना पाया॥
पूर्ण ब्रह्म में चित्त ना दिया। काम रुप महिमा को लिया॥
बिना गुरु कोई भेद ना पावें। झूठ राह सबको बहकावें॥
सत्य पुरुष को भेद ना जाने। झूठी बात को सच्ची माने॥
केवल झूठ को ही लिपटावे। सत्य पुरुष को देख ना पावें॥
पुराण अठारह ग्रन्थ बताये। उनमें भागवत को समझाये॥
ब्रह्म की महिमा कह समझावें। श्री भागवत भक्त गावें॥
कृष्ण जी का चरित सुनते। लेकिन मर्म को नहीं समझते॥
निर्गुण भक्ति चित्त ना लावें। सगुण भक्ति को अपनावें॥
निर्गुण ब्रह्म का भेद ना पावें। शिव समाधि ध्यान लगावें॥
विष्णु मन में ध्यान लगावें। अलख निरंजन छाया पावें॥
छाया देख कर प्रसन्न हो जांय। रुप निरंजन विष्णु बन जायं॥
दैत्यों ने उत्पात मचाया। फिर देवों को बहुत सताया॥

असुर मारके देव बचाये। तभी तो विष्णु सबको भाये ।।
गोपियां के संग रास रचाया। भक्तों ने इसे चित में बसाया
इस लीला ने सभी भुलाये। ब्रह्मादिक सभी मुनि भरमाये ।।
ज्ञान कहे और ज्योति बतावे। ज्योति स्वरुप का भेद ना पावे ।।
ज्योति स्वरुप निरंजन राई। जिसने सब स्रष्टि बहकाई ।।
सत्य पुरुष का भेद ना पाये। झूठ ज्ञान को मन में बसाये ।।
सत्य प्रभु सतगुरु से पावें। सत्य नाम में जाके समावें ।।

दो० कहें धर्म से कबीर जी, अमर मूल सत जान।
अमर शब्द जिस हृदय है, उसे मिले निर्वाण ।।

चौ० उसका सत्य में होता वास। बिना अमर ना काल का नाश
पढ़ पढ़ मूरख ज्ञान बिगाड़ें। सत्य ज्ञान को नही विचारें ।।
सत्य ज्ञान जिस पर भी होता। शब्द की खोज में वह ही लगता
सत्य ज्ञान ना मूरख पावे। सतगुरु इसका भेद बतावे ।।
सारे जग में खोज मचावे। बिना ज्ञान सब मूल गवावे ।।

दो० (साखी) - सन्त मिले संशय मिटे, नही तो जन्मे मरे।
नाव मिली केवट नहीं, कैसे पार तरै ।।

(धर्मदास वचन)

चौ० धर्मदास कहे सुनो गुसाँई। शब्द ज्ञान मुझे दो समझाई ।।
ज्ञान रुप प्रभु प्रकाश। सत्य में किया है वास ।।
कैसे समझूं मैं ये वाणी। सदगुरु बताओ नाम निशानी ।।

(सदगुरु वचन)

चौ०- ज्ञान स्वरुप प्रभु को जानो। ज्ञान रुप ही कबीर मानो ॥
ज्ञान प्रकाश दीप सा जानो। ज्ञान बिना बस झूठ बखानो ॥
बिना ज्ञान हृदय अंधियारा। ज्ञान बिना ना मिले किनारा ॥
ज्ञान बिना अक्षर ना मिलता। अक्षर ज्ञान रुप ही होता ॥
ज्ञान रुप सतपुरुष को जान। इसी वचन को सचचा मान ॥
ज्ञान रुप निः अक्षर होता। अक्षर भेद ज्ञान से मिलता ॥
निः अक्षर को ज्ञान ही जानो। अक्षर निः अक्षर पहचानो ॥
ज्ञान शब्द है पुरुष का अंश। ज्ञानी सोहे मेरे वंश ॥
बिना ज्ञान ना वंश कहावे। ज्ञानी हो तो शब्द को पावे ॥
वही वंश सत शब्द समान। शब्द से ही समझावे ज्ञान ॥

दो०- कहे कबीर विचार के, सत्य यही धर्मदास।
जो भी शब्द को पायेगा, सत्य लोक करे वास ॥

(धर्मदास वचन)

चौ० विनती धर्मदास ये करता। आपके चरणों में सिर धरता ॥
जिससे वंश शब्द कह पावे। सत्य कहे सतलोक में जावें
और जीवों को सत्य बतावे। जिससे जीव मुक्ति को पावे

(सदगुरु वचन)

अब मैं वंश का कहूं विचार। धर्मदास तुम अंश हमार ॥
आदि नाम आनन्दित शाखा। वह ही शब्द वंश को राखा ॥

साठ समैया बारह चौपाई । ये ही तत्त्व हंस घर जाई ।।

जब माली के भेद को पावै । सत्य नाम में जाय समावै ।।

ऐसा भेद सुनो धर्मदास । जन्म-जन्म का मिट जाय त्रास ।।

सत गुरु दया से कर्म मिटावै । नाम में रहे अमर हो जावै ।।

काल ने संशय घट में समाया । ये संशय का ठिकाना बताया ।।

जब प्रभु ने धर्म बनाया । तब ही संशय संग में आया ।।

निः अक्षर का परिचय पाओ । संशय मिटै अमर घर जाओ ।।

ज्ञान संशय से खण्डित होता । ज्ञान हीन संशय में रहता ।।

संशय काल सभी को खावै । निः संशय हो घर को जावै ।।

संशय काल समझ ना आवै । इसको कोई देख ना पावै ।।

एक बात सुन लो धर्म दास । एक नाम की राखो आस ।।

नाम छोड़कर जो भी भटकै । संशय उसको आकर पकड़ै ।।

नाम होय तो संशय मिट जा । बिना नाम के सभी डूब जा ।।

दो० - कहे कबीर समझाय के, संशय का बिस्तार ।

एक नाम जो जान ले, उतरे भव से पार ।।

(धर्मदास वचन)

चौ० ये संशय मुझको स्वामी है । ज्ञान हीन तो सभी जीव हैं ।।

कोई हंस ही ऐसा पावै । जिस हंसा में ज्ञान समावै ।।

ज्ञान बिना मुक्ति ना होवै । तो ये बहकतो जावै ।।

नाम की महिमा आप सुनायें। बिना नाम कोई पार ना जायें॥

(सदगुरु वचन)

कहे कबीर मैं तुम्हें बताऊँ। यह सब भेद तुम्हें समझाऊँ॥
ज्ञान हीन जो प्राणी होता। उसका भेद मैं तुमसे कहता॥
उसको दीजे पान परवान। वह निश्चय पाये निर्वाण॥
और विश्वास हृदय में रख ले। भवसागर से पार उतर ले॥
सत्य बोले नाम को पावे। गुरु चरण हृदय में राखै॥
गुरु पै सब न्यौछावर करना। साधु चरण हृदय में रखना॥
तन मन धन सन्तों पे वारै। सदगुरु चरण हृदय में धारै॥
चरण धोय चरणामृत लेवै। सत्य लोक में अमृत पीवै॥

(धर्मदास वचन)

पुरुष के लिए कहा उपदेश। नारी के लिए कहो सन्देश॥
उसकी मुक्ति कैसे होवै। कैसे घट में ज्ञान समावै॥

(सदगुरु वचन)

उसका भेद तुम्हें समझाऊँ। कामना मन की सभी मिटाऊँ
नारी करे पूर्ण विश्वास। तो फिर तरै सुनो धर्मदास॥
ज्ञान हीन नारी का रुप। उसका तुमसे कहूँ स्वरुप॥
अपने मन को स्वच्छ बनावै। सन्तन की सेवा चित लावै॥
जो साधन में अन्तर करते। धर्मराज के फन्दे पड़ते॥
तन मन से गुरु सेवा करना। गुरु चरण न्यौछावर होना॥

गुरु की सेवा निश दिन करना । इस प्रकार भव सागर तरना ॥
इस प्रकार सुनो धर्मदास । मिट जायेगी काल की फांस ॥

(धर्मदास वचन)

धर्मदास ये विनती करता । गुरु तुम पर बलिहारी जाता ॥
मुझको ये ही वचन सुनाओ । मेरे मन एक भ्रम मिटाओ ॥
सबको नारी रुप में जाना । पुरुष एक हमने पहचाना ॥
नारी कहिये सब संसार । आदि ब्रह्म है पुरुष अपार ॥
आदि पुरुष को तुमने बताया । पुरुष दूसरा कहाँ से आया ॥
तुमने कहो तो हमने जानी । नारी रुप सुरति पहचानी ॥
दूसरी नारी हुई कहाँ से । मन में संशय हुआ यहाँ से ॥
मैं नर रुप मति का हीन । इसी से हुआ मलीन ॥
तुम तो दया वान हो स्वामी । भूल माँफ करो अन्तर्यामी ॥
नारी नाम मात जो पायें । इनका भेद समझ ना पायें ॥
नारी नाम बहिन जो पायें । उनसे कैसे तन को मिलायें ॥
नारी नाम पुत्री जो पायें । उनसे भी कैसे मिल जायें ॥

साखी- सभी भेद समझाओ, आप से विनती करुँ ।
इस संशय को मिटाओ, आपके चरण पड़ूं ॥

(सद् गुरु वचन)

चौ॰ धर्मदास ये भेद बताऊँ । ध्यान से सुनो तुम्हें समझाऊँ ॥
आदि पुरुष अकेले रुप । पंथ दूसरे शब्द स्वरुप ॥

तब साहिब ने ऐसा किया। सृष्टि रचन में चित्त दिया ।।
इच्छा घट से भिन्न निकाली। वहाँ उत्पन्न हुई एक नारी ।।
उसने सबको उत्पन्न किया। भोगी नार पुरुष नाम दिया ।।
नारी से ही बालक आया। इसी भाँति सब जग भ्रमाया ।।(भरमाया)
एक विचार से सभी रचे थे। पुत्र पिता और बन्धु बने थे ।।
एक नारि की रचना हुई थी। बहन पुत्री माता बनी थीं ।।
भाई बहन का किया व्यवहार। धर्मराज का ये संसार ।।
इस संशय में मारता भाई। मार मार कर दुनिया खाई ।।
आप ही पिता आप ही पूत। आप ही देव आप ही भूत ।।
आप ही नारि रूप अवतार। आप ही पूर्ण सृष्टि विस्तार ।।
आप ही कर्म धर्म उपजावे। आप रचै और आप मिटावे ।।
उसका भेद बताऊँ तुमको। ज्ञानी होय समझ ले उसको
धर्मदास का संशय छूटा। जन्म जन्म का पातक टूटा ।।
ज्ञानी से कहिए उपदेश। मूरख से क्या कहो सन्देश ।।
संशय ने किया जग को भंग। कोई ना जाने संशय अंग ।।

दो० - अमर मूल निज शब्द को, चित्त में लायेगा।
गुरु-चरण जो चित्त धरे, वह बच पायेगा ।।

चौ० धर्मदास, तुम करो विचार। बिना शब्द नही उतरे पार ।।
सार शब्द ने सब उपजाये। पुरुष व नारी दोनों बनाये ।।
सूर्य पुरुष चन्द्र है नारी। हृदय में दो रूप सँवारी ।।
जैसे धातु ~~कर्मकी~~ एक। साँचे ने कर दिये अनेक ।।
पाप पुण्य में दिये है बाँध। धर्म ने किये अगम अगाध ।।

पाप पुण्य का भ्रम बनाया। धर्मराज ने सब उपजाया ।।
सारा भ्रम तभी मिट जावै। सत्य नाम में जब भी समावै ।।
जब तक मन में भ्रम समावै। तब तक नाम समझ ना पावै ।।
ना पहचाने मूढ़ गवार। भ्रम में भूला सब संसार ।।
धर्मदास तुम भ्रम मिटाओ। निर्भय होके नाम चित्त लाओ ।।
धर्मदास यदि भ्रम रखोगे। हंसा कैसे पार करोगे ।।
भ्रम छोड़ के भक्ति बढ़ाओ। हंसा सत्य लोक ले जाओ ।।
तुमको दिया जगत का भार। आपको मुहर चले संसार ।।
आपके हाथ से जीव तरेंगे। भवसागर को पार करेंगे ।।
तुम इस जग को पारस देना। जीव को छुड़ा काल से लेना ।।
पारस नाम कहूं उपदेश। मूरख से जिन कहो सन्देश ।।

छन्द:- कहे कबीर यह भेद तुमको कहूं सब समझाय के।
विवेक वाणी रहनी सहनी सब कहूं बतलाय के ।।
नाम पारस घट सभी के, हंस हो या काग हो।
सत्य लोक में वास हो वहाँ ना ही काल कराल हो ।।

दो: पूर्ण गुरु इस जीव को करले आप समान।
रुप रंग पहचान के, देख के नाम निशान ।।

इति श्री अमर मूल ग्रन्थ नाम महिमा
वर्णन तृतीय विश्राम ।।

(धर्मदास वचन)

चौ० - धर्मदास फिर विनती करते। गुरु आप हंसों को तारेत
कैसे पलटे जीव की काया। सब समझाओ करके दया।।
तुम सतगुरु हो अन्तर्यामी। पारस भेद बताओ स्वामी।।

(सतगुरु वचन)

धर्मदास सुन सन्त सुजान। पारस भेद सुनाऊँ ज्ञान।।
ज्ञानी कहे शबद है सार। इस पारस से हंस उबार।।
ये पारस बालक पे जावे। काल नही कुछ भी कर पावे।।
इसी तरह से पंथ चलाओ। सत्य लोक जीवों को लाओ।।
तीनो विधि कहीं समझाके। जो माने वह लोक को जावे।।
होके पुरुष शबद ना पावै। निश्चय ही वह नरक को जावै।।
बालक हो बीरा ना पावै। कैसे वह सतलोक ~~सिद्ध~~ सिधावै।।
नारी हो पारस ना लेवे। गुरु उसे जो पारस देवै।।
कामिनी जो पारस को लेती। उसको इससे मुक्ति होती।।
गुरु जो इसमें भेद है करता। यमराज के फन्दे फंसता।।
जो शिष्य को ज्ञान ना देवे। धोखे बाज गुरु कहलावे।।
शिष्य गुरु से अन्तर करता। धोखे बाज शिष्य होता।।
गुरु वही जो देवे ज्ञान। शिष्य गुरु का रक्खे मान।।
गुरु से जो भी कपट है करता। निश्चय ही वह नरक में जाता
तुमसे भेद कहा सब ज्ञान। सुन लो निश्चय वचन सुजान।।

(धर्मदास वचन)

धर्मदास करे बिनती तुमसे। इतना भेद कहो गुरु हमसे ॥
नारी नरक की खान कहावै। गुरु पास में कैसे आवै ॥
सभी नरक नारी पै बतावैं। वही नरक गुरु कैसे चाहवैं ॥
गुरु रूप तो ब्रह्म समान। नर्क भोगने मे क्या ज्ञान ॥
गुरु की महिमा अगम बताई। नीच वचन कैसे कहूं सांई ॥
नीच वही जो नीची कहता। नीच पंथ से पार न होता ॥
ऊंचा होय गुरु पद धार। नीचा छोड़ ऊंचा भव पार ॥
नीचा कर्म गुरु ने काटा। गुरु वचन मैंने हृदय राखा ॥

दो० अब तुम मुझे बताओ, हे गुरु अगम अपार।
धर्मदास की बिनती, सुन लो हे करतार ॥

दो० रहित ज्ञान तुमने कहा, सत्य शब्द ठहराय।
व्यभिचारी और संत को, कहो गुरु समझाय ॥

(सतगुरु वचन)

चौ० कहें कबीर सुनो धर्मदास। अब भी भेद तुम्हारे पास ॥
हमने जाना संशय छूटा। लेकिन काल ने तुमको लूटा ॥
काल की गति को समझ ना पाय। झूठी माया में लिपटाय ॥
जब समझो निज ब्रह्म स्वरूप। ना कोई रंक ना कोई भूप ॥
जीव बुद्धि को छोड़ ना पाये। यम के फन्दे में फिर आये ॥
धर्मराज की गति ना जानी। हर मन्दिर उपजाओ आनी ॥

इस बाजी में जीव भुलाया। शिव ने समाधि ध्यान लगाया ॥
विष्णु रुप से सब अनजान। सुर मुनि नर डूबे अभिमान ॥
इसी वचन में सब जग बधता। नाम बिना नही कोई छूटता ॥
झूठी माया जग का फन्द। फन्द कटे बिन मिटे ना द्वन्द ॥
अज्ञानी इस जीव को फांसा। नर्क स्वर्ग की कर दी आशा ॥
संशय काटने को हम आये। धर्मराज इस जग को खाए ॥
ज्ञान विचार तुम्हें समझाये। तुमको धर्मराज भ्रमाये ॥
वचन हमारे दोष लगाये। तुम झूठी माया ने फसाये ॥
शिष्य वही गुरु वचन ले मान। आप ज्ञान पूछे नही ज्ञान ॥
गुरु विश्वास ना हृदय आवे। इसी से दुनिया डूबी जावे ॥
वहाँ डूबे जहाँ थाह ना पावे। तभी तो जन्म जन्म भरमावे ॥
अन्तर्धान हुए गुरु देव। धर्म करे भारी खेद ॥

(धर्मदास वचन)

दया करो गुरु पूर्ण स्वामी। मैं नही समझा अन्तर्यामी ॥
आपका मर्म ना पाया जान। मैं अज्ञान फंसा अभिमान ॥
मेरे मन जो अन्तर आया। क्षमा करो मैं समझ ना पाया ॥
तुम सतगुरु हो ब्रह्म समान। हे प्रभु मैं तो अज्ञान ॥
मैंने कडुवे वचन सुनाये। आपके हृदय कष्ट दिलाये ॥
करुणा मय गुरु अन्तर्यामी। दया करो अब मुझ पर स्वामी ॥
जो नही आपके दर्शन पाऊँ। आपके कारण प्राण गवाऊँ ॥
साहिब आपने पथ जो दिया। तभी तो तुमसे पूछ लिया ॥

दो० धर्मदास भारी दुःखी, करुणा बहु विधि कीन्ह ।
दर्शन बिन ऐसे विकल जल बिन जैसे मीन ॥

(सत गुरु वचन)

चौ॰ - तभी कबीर दया चित्त लाये। धर्मदास ने दर्शन पाये ।।
दर्शन पाकर हुआ आनन्द। ज्यों चकोर को मिलता चन्द्र ।।
गुरु चरणों का वन्दन किया। चरण धोय चरणा मृत लिया ।।
बिनती करी चरण चित लाई। महा प्रसाद दीजिए सांई ।।
को आदेश दिया। सारा कार्य तुरन्त हो किया ।।
कंचन थार आरती चार। सेवा अति हृदय में धार ।।
सुत नारी चरणों में लग गये। प्रेम विश्वास भक्ति में भर गये
चरणा मृत सबने हो लिया। दिव्य ज्ञान सब ही को दिया ।।
गुरु को आसन दिया लाकर। गुरु बैठे चौका में जाकर ।।
लेकर थाल नारी आयी। गुरु चरण में शीश झुकाई ।।
सबने फिर प्रसाद खाया। प्रेम भाव गुरु के मन भाया ।।
ले प्रसाद आचवन किया। धर्मदास ने निवेदन किया ।।
दया करो अब मुझ पर स्वामी। बन्दो छोड़ हे अन्तर्यामी ।।
तब दिया प्रसाद गुसांई। धर्म दास हरषे मन मांही ।।
जब तक साथ रहे थे घर में। सब आनन्द रहे थे मन में ।।
उनके लिए फिर पलंग बिछाया। सत गुरु को उस पर बैठाया
धर्मदास फिर पंखा हिलावें। आमिनि उनके चरण दबावें ।।
सबने मिलकर वन्दन किया। तन मन धन गुरु देव को दिया ।।
मिट गयी सभी जगत की लाज। इससे हों जीव के काज ।।
सब कुछ धर्म निछावर करते। बार-बार फिर बिनती करते ।।

दो॰ - ये तन तुम गुरु देव लो, जिससे होवै काज ।
तन मन सब न्यौछावर, सुख सम्पौत्ते कुल लाज ।।

(सद्‌गुरु वचन)

कर धर सिज्या पर बैठाया | अन्तर गोते को स्थिर कराया ||
ज्यों ही मुख के भीतर देखा | सभी कसौटी किया परीक्षा ||
सतगुरु ने फिर ऐसा किया | आमीन के मस्तक कर रख दिया
जाओ न अपने घर के मांहीं | सत्य तुम्हारे है मन माहीं ||
यह मन कर्म अकर्म करावे | देह के स्वारथ नाच नचावे ||
आपके मन को स्थिर जान | काल का छूटा है अभिमान ||
देह हमारी कामना होया | अहंकार सब आपका खोया ||
धर्मदास करो वंश उजागर | हंसों को भेजो सुख सागर ||
तुमको दिया मुक्ति परवाना | सत्य लोक में तुम भिजवाना ||
वंश तुम्हारा जहाँ तक होगा | अपने हाथ से मुक्ति करेगा ||
वंश बयालिस अचल रहेगा | सारे जग को मुक्ति करेगा
वंश बयालिस तेरह भाषा | अंश हमारे को हैं शाखा ||
नाम ही लेवे सबको उबार | बिना नाम डूबे संसार ||

(धर्मदास वचन)

धर्मदास करे विनती स्वामी | बलिहारी है अन्तर्यामी ||
आपने पारस दिया है स्वामी | फिर कब दर्शन होंगे स्वामी
विनती मेरी तुम सुन लीजिए | वंश को स्वामी अपना कीजिए ||
जिससे सब ही मुक्ति पावें | हे गुरु देव वही बतावें ||

(सदगुरु वचन)

आपके वंश को किया उपदेश। जिससे होता हंस का वेश
जग में जो कोई हंस होगा। आपके वंश से पार होगा।।
आपके वंश जो बालक होगा। उनसे हर कोई पारस लेगा।।
उनको काम नही व्यापेगा। निशदिन शब्द में ध्यान रहेगा
वे सब स्थिर अंग रहेंगे। मन से वचन से सत्य रहेंगे।।
जो पारस को जाने भेद। आत्मा परखें सूक्ष्म भेद।।
ऐसा स्नेही ये शब्द है। ये कबीर बनकर प्रकट है।।
उनसे पारस भेद ना कहना। वंश का जो विश्वास करे ना।।
जो पारस में भेद करेंगे। कहे कबीर तो कैसे तरेंगे।।
बालक ज्ञान दे पंथ चलाओ। बिना पंथ के लक्ष्य ना पाओ।।
बालक तेरे वंश के हाथ। पंथ दिया मैंने उनके साथ।।
जो मुक्ति का भेद छुपावे। द्रोही सबसे बड़ा कहावे।।
शब्द जान कर पंथ चलावे। देश देश सबको समझावे।।
फिर वह जिस भी देश में जावें। योग्य हंसों को मुक्त करावें।।
प्रभु ने मुझे जो दिया आदेश। मैंने तुमसे कहा सन्देश।।
सार शब्द का भेद जो पाया। वह सब ज्ञान तुम्हें समझाया।।
बिना नाम ना संशय मिटता। जाने नाम हमारे वंशा।।
नाम का ज्ञान वंश करावे। बिना नाम नही मुक्ति पावे।।
आपका वंश नाम जो पावे। भवसागर से लोक को जावे।।
नाम ना जाने करे अहंकार। भव से ना उतरेगा पार।।
वंश वही जो नाम को जाने। डूबे वही जो नाम ना जाने।।
बिना नाम सबको अभिमान। नाम का किसी किसी को ज्ञान।।

नाम निः अक्षर कहा समझाकर। अमर मूल में देखो आकर ॥
निः अक्षर का भेद जो पावै। वह हंसा सतलोक को जावै ॥

दो० - निः अक्षर के भेद को कहे कबीर विचार ।
निः अक्षर जो पावे, होवे भव से पार ॥

चौ० - निः अक्षर का ज्ञान सुनाओ। जम्बू दीप के हंस मुक्ताओ ॥
जो भी ऐसा धर्म धरेगा। वह ही भव को पार करेगा ॥
तुमको दिया पंथ का राज। हाथ तुम्हारे जीव का काज ॥
तुमको ये ही ज्ञान बताया। और कोई पहचान ना पाया ॥
अक्षर भेद जो मन में बसावै। हमको अपने साथ ही पावै ॥
सत्य लोक में जगह वह पावे। अमृत भोजन पूरा पावै

छन्द यही महिमा जीव धरके वास हो सतलोक में ।
काल फन्दा काट के लाओ तो उनको लोक में ॥
सुमिरन करें और वास हो वहाँ फिर अमृत को पायेंगे ।
अमर वस्त्र पहनकर जीवन मरण मिटायेंगे ॥

दो० - हंस की शोभा है वहाँ, सोलह सूर्य समान ।
अमरलोक में वास हो, पावे शब्द का ज्ञान ॥

इति श्री ग्रन्थ अमर मूल धर्मदास कसौटी, पारस भेद वर्णन - चतुर्थ विश्राम

(धर्मदास वचन)

चौ० धर्मदास फिर विनती गाय। अब तक हम तुम्हें जान ना पाये॥
जब से दया है हुई तुम्हारी। हृदय में प्रकाश है भारी॥
अमर लोक के हो तुम वासी। यहां पर आये हो अविनाशी॥
किसकारण वश यहाँ पर आये। धर्मराज के काम बताये॥

(सद् गुरु वचन)

धर्मदास सुनो ध्यान लगाकर। मुझे प्रभु ने भेजा यहाँ पर॥
सत्य लोक से जग में आया। मुझे देखने धर्म भी आया॥
धर्मराज ने पूछी बात। किस कारण से आये तात॥
मैंने कहा मृत लोक में जाऊँ। हंसो को सत लोक में लाऊँ॥
कहे धर्म तुम ऐसा करोगे। मेरे देश में मुक्ति दोगे॥
मुझ पर तीन लोक का राज। कैसे करोगे तुम वहां काज॥
मुझको ये सब प्रभु ने दिया। तुमने छुड़ाने का मन क्यों किया
यही भला है अब तुम जाओ। जीव जन्तु मारो जहां पाओ॥
अगम अपार निरंजन देव। तुम नहीं जानो मेरा भेद॥
कैसे हंसों को पार करोगे। कौन भेद ले वहां जाओगे॥
हमने कहा धर्म पहचानो। मर्म कार्य का ना जानो॥
हम पर शब्द का बल है भाई। उसी से मुक्त करेंगे जाई॥
जहां नाम वहां तुम नहीं कोई। बिना नाम निस्सार हो भाई॥
ऐसे हंस परवाना पावे। अपना आवागमन छुड़ावें॥

(धर्मराय वचन)

जिस भी नाम से सुमिरन किया। वही नाम है हमने दिया॥

जो कोई धर्म करे संसार। वह सब तो मेरा व्यवहार ॥
मैने बहुत रचाया फन्दा। शंकर सहित सभी को बांधा ॥
कौन से नाम से तुम मुक्ताओ। हे भाई मुझे भेद बताओ ॥

(ज्ञानी वचन)

हमने नाम लिया है प्रभु से। होंगे जीव मुक्त भी उससे ॥
धर्मराज तुम जान ना पाये। आपके अवगुण रहे भुलाये ॥
यहि नाम तुम भी यदि लेते। जीवों को फिर कष्ट ना देते ॥

(धर्मराय वचन)

परम पुरुष है मेरा नाम। पुरुष दूसरे का क्या काम ॥
मेरे आगे कौन कहाया। सबको मार-मार भरमाया ॥
जीव हैं तीन लोक विस्तार। उनको मार करूँ संहार ॥
ब्रहमा पुत्र हमारा जो है। अन्त काल दुःख पावे वो है ॥
शिव समाधि में जो रहता। उसे नष्ट प्रलय में करता ॥
विष्णु बड़े सभी से अंश। उनको मार करूँ निरवंश ॥
अपने अंश को यही गति देता। स्रष्टि को प्रलय कर लेता ॥
तुम आये हंसों को उबारन। कैसे करोगे उनका तारन ॥

(ज्ञानी वचन)

धर्मराज को फिर समझाया। जीवों को है तुमने सताया ॥
तुमने काम चोर का किया। तभी पुरुष ने मुझे भेज दिया ॥
एक नाम मुझे दिया अमोल। जीवों के बंधन दे खोल ॥
ठाकुर नाम है तुमने पाया। तीन लोक में राज चलाया ॥
पुरुष के नाम को तुमने भुलाया। अपने आप को पुरुष बताया ॥
योग सन्तायन हम कहलाये। तेरे कारण प्रभु ने बनाये ॥
तुम निज धर्म का करो अहंकार। आदि ब्रहम करें खबार

(धर्मराय वचन)

उत्तर दिया धर्मराय ने। हम पर कृपा करी प्रभु ने ।।
तुम भी दया करो अब मुझ पर। जिससे राज रहे इस जग पर
तुम हो बड़े हम छोटे भाई। तुम यहाँ पर क्यों भेजे भाई।।
प्रभु समान हो तुमको जाना। तुमने मन में ये क्या ठाना ।।
अब तुम कहो यही उपदेश। जिससे ऊजड़ होय ना देश ।।
पुरुष की बात ही हमने मानी। आज्ञा भंग करो नहो ज्ञानी ।।

(ज्ञानी वचन)

योग संतायन ने ये बताया। पुरुष ने तुमको ये समझाया ।।
जो भी हंस नाम को पावै। उसके काल निकट नहो आवै।।
जो भी कोई ज्ञानी पाओ। उसको नहो कोई कष्ट दिखाओ ।।
सार शब्द जो कोई पावै। आपका प्रेम बहुत वह पावै ।।
तुमसे यही हमारा कहना। प्रभु के वचन मान तुम लेना ।।
जो इतना ना करो कबूल। तो तुम सहोगे दुःख के शूल ।।
जिस पर शब्द ज्ञान ना पाओ। उसको करो जैसा तुम चाहो ।।
धर्मराय ने ये सब जाना। तुमने कहा वही परवाना ।।
विनती एक हमारी सुनना। नाम सन्देश मुझे भी देना ।।

दो० - मैं उपदेश जो पाऊँ, वह सब कहूँ तुम्हार।
तुम्हीं पुरुष के अगुवा, हंस छुड़ावन हार ।।

(ज्ञानी वचन)

चौ० - यही प्रभु की आज्ञा मान। तुम नहो पाओ नाम का ज्ञान
सत्य लोक में तुम जो रहे थे। चौंसठ युग तक सेवा किये थे